The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 शोभा गिल
एसोसिएट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ आर्ट्स एन्ड सोशल साइंस
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर (उ0प्र0)

स्वाति शर्मा
शोधार्थिनी
स्कूल ऑफ आर्ट्स एन्ड सोशल साइंस
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन इस उद्देश्य से किया गया कि परिवार की संरचना किशोरों के शारीरिक तथा संवेगात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित करती है। परिवार बालक के व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम एवं सर्वाधिक प्रभावशाली संस्था है। किशोरावस्था जीवन का वह संक्रमणकाल है जिसमें तीव्र शारीरिक, जैविक तथा संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में परिवार द्वारा प्रदान किया गया वातावरण, स्नेह, अनुशासन, सुरक्षा तथा सहयोग किशोरों के संतुलित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या बढ़ने से किशोरों के विकास पर पारिवारिक संरचना के प्रभाव का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन के दो प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। प्रथम, संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के शारीरिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा द्वितीय, उनके संवेगात्मक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना। इन्हीं उद्देश्यों के आधार पर दो शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गईं कि दोनों प्रकार के परिवारों के किशोरों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा। अध्ययन हेतु मुरादाबाद जनपद के 250 किशोरों का चयन किया गया, जिनमें 140 संयुक्त परिवार तथा 110 एकल परिवार से थे। आँकड़ों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित शारीरिक विकास मापनी एवं संवेगात्मक विकास मापनी का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात द्वारा किया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि परिवार की संरचना किशोरों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। संयुक्त परिवारों में उपलब्ध भावनात्मक सुरक्षा, पारिवारिक सहयोग, अनुभवी सदस्यों का मार्गदर्शन तथा सामूहिक जीवन शैली

किशोरों के संतुलित विकास में सहायक सिद्ध होती है। साथ ही, अध्ययन यह भी संकेत करता है कि केवल परिवार का प्रकार ही नहीं, बल्कि परिवार का वातावरण, सदस्यों के मध्य संवाद, पारस्परिक सहयोग तथा पालन–पोषण की शैली भी किशोरों के समग्र विकास को प्रभावित करती है। अतः अभिभावकों, शिक्षकों एवं नीति–निर्माताओं को ऐसा सहयोगात्मक एवं सकारात्मक पारिवारिक वातावरण विकसित करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे प्रत्येक किशोर का शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास स्वस्थ, संतुलित एवं प्रभावी रूप से हो सके।

मुख्यशब्द – संयुक्त एवं एकल परिवार, किशोरावस्था, शारीरिक विकास एवं संवेगात्मक विकास

प्रस्तावना

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन, प्राकृतिक तथा प्रभावशाली सामाजिक संस्था है। यह वह आधारभूत इकाई है जहाँ बालक का जन्म होता है, उसका पालन–पोषण होता है तथा उसके व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। बालक के जीवन में परिवार केवल जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला माध्यम नहीं है बल्कि यह उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक तथा संवेगात्मक विकास का प्रमुख केन्द्र भी होता है। परिवार में प्राप्त वातावरण, पारिवारिक सम्बन्धों की गुणवत्ता, सदस्यों के बीच पारस्परिक सहयोग, अनुशासन, स्नेह, सुरक्षा तथा सांस्कृतिक मूल्यों का प्रत्यक्ष प्रभाव बालक के सर्वांगीण विकास पर पड़ता है। विशेष रूप से किशोरावस्था जैसी संवेदनशील एवं संक्रमणकालीन अवस्था में परिवार की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इस समय बालक तीव्र शारीरिक परिवर्तनों, भावनात्मक उतार–चढ़ाव तथा सामाजिक समायोजन की अनेक चुनौतियों का सामना करता है। वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। जहाँ एक ओर परम्परागत संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे–धीरे एकल परिवार लेते जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बदलती जीवनशैली, शहरीकरण, औद्योगीकरण, रोजगार के अवसरों का विस्तार तथा शिक्षा के बढ़ते स्तर ने परिवार की संरचना एवं कार्यप्रणाली को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक विशिष्ट व्यवस्था रही है, जिसमें अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती हैं तथा संसाधनों, उत्तरदायित्वों एवं भावनात्मक सम्बन्धों का साझा निर्वहन करती हैं। इसके विपरीत एकल परिवार में सामान्यतः माता–पिता एवं उनके अविवाहित बच्चे ही सम्मिलित होते हैं। दोनों प्रकार की पारिवारिक व्यवस्थाओं की अपनी–अपनी विशेषताएँ, सीमाएँ तथा बालकों के विकास पर भिन्न–भिन्न प्रभाव देखने को मिलते हैं। किशोरावस्था बाल्यावस्था एवं प्रौढ़ावस्था के मध्य की वह महत्वपूर्ण अवस्था है जिसमें बालक के जीवन में तीव्र शारीरिक, जैविक, संवेगात्मक तथा सामाजिक परिवर्तन होते हैं। सामान्यतः 12 से 18 वर्ष की आयु को किशोरावस्था माना जाता है। इस अवधि में हार्मोनल परिवर्तनों के कारण शरीर की ऊँचाई एवं वजन में वृद्धि, मांसपेशियों का विकास, लैंगिक परिपक्वता, स्वर परिवर्तन तथा अन्य अनेक शारीरिक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं साथ ही किशोर अपने व्यक्तित्व, आत्मसम्मान, आत्मपहचान एवं सामाजिक सम्बन्धों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है। इस अवस्था में यदि परिवार का वातावरण सहयोगात्मक, सुरक्षित एवं प्रेरणादायक हो तो किशोर स्वस्थ शारीरिक विकास के साथ–साथ भावनात्मक रूप से भी संतुलित एवं आत्मविश्वासी बनता है। इसके विपरीत तनावपूर्ण, उपेक्षापूर्ण

अथवा असहयोगात्मक पारिवारिक वातावरण किशोर के विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकता है। शारीरिक विकास किशोरावस्था के विकास का आधारभूत पक्ष है। स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण करता है। किशोरों के शारीरिक विकास पर पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ, नियमित दिनचर्या, व्यायाम, खेलकूद, विश्राम, स्वच्छता तथा पारिवारिक देखभाल का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संयुक्त परिवारों में सामान्यतः अनेक सदस्यों की उपस्थिति के कारण बालकों की देखभाल, स्वास्थ्य सम्बन्धी मार्गदर्शन एवं सामाजिक सुरक्षा अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध होती है। दादा–दादी अथवा अन्य वरिष्ठ सदस्यों का अनुभव बच्चों के पालन–पोषण में सहायक होता है। दूसरी ओर एकल परिवारों में माता–पिता बच्चों की आवश्यकताओं पर अधिक व्यक्तिगत ध्यान दे सकते हैं तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण पर अपेक्षाकृत अधिक संसाधन व्यय कर सकते हैं किन्तु कार्यरत माता–पिता की व्यस्तता, सीमित सामाजिक सहयोग तथा पारिवारिक समर्थन की कमी कभी–कभी बच्चों के समुचित शारीरिक विकास को प्रभावित कर सकती है इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि दोनों प्रकार के परिवारों में किशोरों के शारीरिक विकास की वास्तविक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। संवेगात्मक विकास से आशय व्यक्ति की भावनाओं को समझने, व्यक्त करने, नियंत्रित करने तथा परिस्थितियों के अनुरूप उनका समायोजन करने की क्षमता से है। किशोरावस्था में संवेगात्मक परिवर्तन अत्यधिक तीव्र होते हैं। इस समय किशोर में आत्मसम्मान, स्वतंत्रता की भावना, भविष्य के प्रति चिंता, मित्रता, प्रतिस्पर्धा, आकर्षण, असुरक्षा, क्रोध, निराशा तथा संवेदनशीलता जैसी अनेक भावनाएँ विकसित होती हैं। यदि परिवार का वातावरण प्रेमपूर्ण, सहयोगात्मक, लोकतांत्रिक एवं संवादपूर्ण हो तो किशोर इन भावनाओं को सकारात्मक दिशा प्रदान कर पाता है। इसके विपरीत पारिवारिक तनाव, उपेक्षा, अत्यधिक नियंत्रण, संघर्ष अथवा संवादहीनता किशोरों में भावनात्मक असंतुलन, तनाव, चिंता, आक्रामकता, हीनभावना तथा सामाजिक समायोजन की समस्याओं को जन्म दे सकती है। अतः संवेगात्मक विकास के संदर्भ में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। संयुक्त परिवारों में बच्चों को अनेक सदस्यों के साथ रहने का अवसर प्राप्त होता है जिससे उनमें सहयोग, सहनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, सामूहिक निर्णय, परस्पर सम्मान तथा भावनात्मक सुरक्षा की भावना विकसित हो सकती है। किसी समस्या की स्थिति में परिवार के विभिन्न सदस्य बच्चों को भावनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं, जिससे तनाव एवं अकेलेपन की भावना कम होती है। वहीं दूसरी ओर संयुक्त परिवारों में कभी–कभी अत्यधिक हस्तक्षेप, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव, पीढ़ियों के बीच मतभेद तथा निर्णय लेने की सीमित स्वतंत्रता जैसी परिस्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं, जो किशोरों के संवेगात्मक विकास को प्रभावित कर सकती हैं। इसके विपरीत एकल परिवारों में माता–पिता एवं बच्चों के बीच प्रत्यक्ष संवाद तथा व्यक्तिगत ध्यान अधिक होता है। माता–पिता बच्चों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं समस्याओं को निकटता से समझ सकते हैं तथा उनके व्यक्तित्व विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों को स्वतंत्र निर्णय लेने एवं आत्मनिर्भर बनने के अधिक अवसर भी प्राप्त होते हैं। किन्तु यदि माता–पिता दोनों कार्यरत हों अथवा परिवार में भावनात्मक सहयोग का अभाव हो तो किशोर अकेलेपन, तनाव, असुरक्षा तथा भावनात्मक दबाव का अनुभव कर सकते हैं इसलिए यह स्पष्ट नहीं कहा जा सकता कि केवल संयुक्त अथवा केवल एकल परिवार ही किशोरों के विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं बल्कि दोनों व्यवस्थाओं की प्रभावशीलता परिवार

के वातावरण, पारिवारिक सम्बन्धों की गुणवत्ता, पालन–पोषण शैली तथा सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों पर भी निर्भर करती है। वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक, सोशल मीडिया, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा, बदलती जीवनशैली, उपभोक्तावाद तथा सामाजिक अपेक्षाओं ने किशोरों के जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक जटिल बना दिया है। ऐसी परिस्थितियों में परिवार का सहयोग किशोरों के स्वस्थ शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। यदि परिवार संतुलित वातावरण, उचित मार्गदर्शन, भावनात्मक सुरक्षा, सकारात्मक अनुशासन तथा स्वस्थ जीवनशैली प्रदान करता है तो किशोर जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम बनते हैं इसलिए परिवार की संरचना के साथ–साथ उसके वातावरण एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन भी समान रूप से आवश्यक है। शैक्षिक दृष्टि से भी इस विषय का विशेष महत्व है क्योंकि विद्यालय एवं परिवार दोनों बालक के विकास की पूरक संस्थाएँ हैं। यदि शिक्षकों को यह जानकारी हो कि संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले किशोरों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास में किस प्रकार के अंतर पाए जाते हैं, तो वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण, परामर्श तथा सहगामी गतिविधियों का प्रभावी नियोजन कर सकते हैं। इसी प्रकार अभिभावकों को भी यह समझने में सहायता मिलती है कि परिवार का वातावरण, पालन–पोषण शैली तथा पारिवारिक सम्बन्ध बच्चों के विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन नीति–निर्माताओं, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अतः प्रस्तुत शोध विषय संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक एवं समसामयिक है। इसका उद्देश्य केवल दोनों प्रकार के परिवारों की तुलना करना नहीं है बल्कि यह समझना भी है कि पारिवारिक संरचना, पारिवारिक वातावरण एवं पारस्परिक सम्बन्ध किस प्रकार किशोरों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक संतुलन को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष परिवार, विद्यालय तथा समाज को ऐसे उपाय अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे जिनसे प्रत्येक किशोर को स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक विकास के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया जा सके तथा वह शारीरिक रूप से स्वस्थ, भावनात्मक रूप से सुदृढ़ एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित हो सके।

आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना में व्यापक बदलाव देखने को मिल रहा है। जहाँ पहले संयुक्त परिवार भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता हुआ करता था, वहीं आज शहरीकरण, औद्योगीकरण, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, शिक्षा के विस्तार तथा जीवन–शैली में परिवर्तन के कारण एकल परिवारों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। परिवार की यह बदलती संरचना किशोरों के व्यक्तित्व, व्यवहार, शारीरिक स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक विकास को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही है। किशोरावस्था मानव जीवन का अत्यंत संवेदनशील एवं संक्रमणकालीन चरण है, जिसमें बालक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक स्तर पर तीव्र परिवर्तन अनुभव करता है। इस अवस्था में परिवार का सहयोग, मार्गदर्शन, अनुशासन, सुरक्षा तथा भावनात्मक समर्थन अत्यधिक आवश्यक होता है। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि संयुक्त एवं एकल परिवारों की भिन्न–भिन्न पारिवारिक

परिस्थितियाँ किशोरों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। शारीरिक विकास किशोरावस्था का सबसे स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन है। इस अवस्था में शरीर की ऊँचाई, वजन, मांसपेशियों का विकास, हार्मोनल परिवर्तन, यौन परिपक्वता तथा शारीरिक क्षमता में तीव्र वृद्धि होती है। इन परिवर्तनों के दौरान उचित पोषण, नियमित दिनचर्या, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता तथा परिवार का सहयोग अत्यंत आवश्यक होता है। संयुक्त परिवार में अनेक सदस्यों की उपस्थिति के कारण बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य संबंधी निगरानी तथा दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी हो सकती है। दूसरी ओर, एकल परिवार में माता–पिता को सीमित समय एवं संसाधनों के कारण अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, यद्यपि वहाँ बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान अधिक दिया जा सकता है। इसलिए यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि दोनों प्रकार के परिवार किशोरों के शारीरिक विकास को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं तथा किन परिस्थितियों में कौन–सी पारिवारिक व्यवस्था अधिक अनुकूल सिद्ध होती है। संवेगात्मक विकास किशोरावस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। इस अवस्था में किशोर अनेक प्रकार की भावनात्मक चुनौतियों का सामना करते हैं, जैसे आत्मसम्मान का विकास, पहचान की खोज, मित्रों का प्रभाव, भविष्य की चिंता, प्रतियोगिता, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा सामाजिक दबाव। यदि परिवार का वातावरण सहयोगात्मक, स्नेहपूर्ण एवं संवादपरक होता है, तो किशोर अपनी भावनाओं को संतुलित ढंग से व्यक्त करना सीखता है और उसमें आत्मविश्वास, सहनशीलता तथा भावनात्मक स्थिरता विकसित होती है। इसके विपरीत, यदि परिवार में तनाव, उपेक्षा, अत्यधिक नियंत्रण अथवा संवाद की कमी होती है, तो किशोर में चिंता, तनाव, आक्रोश, असुरक्षा तथा अवसाद जैसी समस्याएँ विकसित हो सकती हैं। संयुक्त परिवारों में दादा–दादी, चाचा–चाची तथा अन्य सदस्यों का स्नेह एवं अनुभव किशोर को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान कर सकता है, जबकि एकल परिवार में माता–पिता और बच्चों के बीच अधिक निकटता एवं व्यक्तिगत संवाद का अवसर उपलब्ध हो सकता है। इन दोनों व्यवस्थाओं के संवेगात्मक प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान समय की आवश्यकता है। आज के डिजिटल युग में किशोरों का अधिकांश समय मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा अन्य डिजिटल माध्यमों पर व्यतीत हो रहा है। इससे उनके शारीरिक स्वास्थ्य, दिनचर्या, नींद, व्यायाम तथा सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही, सोशल मीडिया के कारण तुलना, प्रतिस्पर्धा, अकेलेपन तथा भावनात्मक असंतुलन की समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में परिवार की भूमिका पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। परिवार यदि उचित मार्गदर्शन, समय तथा भावनात्मक सहयोग प्रदान करता है, तो किशोर इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकता है। इसलिए यह अध्ययन वर्तमान सामाजिक एवं तकनीकी परिवेश में परिवार की प्रभावशीलता को समझने में भी सहायक होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के समग्र विकास पर विशेष बल दिया गया है। समग्र विकास में केवल बौद्धिक या शैक्षिक उपलब्धि ही नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नैतिक मूल्यों का विकास भी सम्मिलित है। विद्यालय एवं परिवार दोनों मिलकर इस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। यदि परिवार का वातावरण किशोर के विकास के अनुकूल होगा, तो विद्यालयी शिक्षा के परिणाम भी अधिक प्रभावी होंगे। इसलिए इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा नीति–निर्माताओं को यह समझने में सहायता करेंगे कि

किशोरों के समग्र विकास के लिए किस प्रकार का पारिवारिक वातावरण अधिक उपयोगी है। यह अध्ययन अभिभावकों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। इसके माध्यम से वे यह समझ सकेंगे कि केवल आर्थिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना, उनकी समस्याओं को सुनना, उचित मार्गदर्शन देना, सकारात्मक संवाद स्थापित करना तथा भावनात्मक समर्थन प्रदान करना भी उतना ही आवश्यक है। यदि परिवार के सदस्य किशोरों की आवश्यकताओं को समझते हुए सहयोगात्मक वातावरण निर्मित करें, तो उनके शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। शोध की दृष्टि से भी इस विषय का विशेष महत्व है। यद्यपि परिवार एवं किशोर विकास पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, किन्तु संयुक्त एवं एकल परिवारों के संदर्भ में किशोरों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है, विशेषकर भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में। भारतीय परिवारों की संरचना, मूल्य, परंपराएँ तथा सामाजिक संबंध पश्चिमी देशों से भिन्न हैं। इसलिए भारतीय संदर्भ में किए गए ऐसे अध्ययन अधिक प्रासंगिक एवं उपयोगी होंगे। यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए आधार सामग्री उपलब्ध कराएगा तथा परिवार, किशोर मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में नए अनुसंधानों को दिशा प्रदान करेगा।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

अग्रवाल एवं बर्क (2015) ने भारत में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित उपलब्ध शोधों की व्यवस्थित समीक्षा प्रस्तुत की। अध्ययन में पाया गया कि पारिवारिक संघर्ष, माता–पिता के मध्य निरन्तर विवाद, परिवार के सदस्यों के बीच कमजोर सम्बन्ध तथा एकल परिवार जैसी परिस्थितियाँ किशोरों में तनाव, अवसाद, चिंता एवं व्यवहारगत समस्याओं को बढ़ावा देती हैं। इसके विपरीत जिन परिवारों में प्रेम, सहयोग, संवाद तथा भावनात्मक सुरक्षा का वातावरण उपलब्ध था, वहाँ किशोरों का संवेगात्मक विकास अधिक संतुलित एवं स्वस्थ पाया गया। अध्ययन ने यह निष्कर्ष दिया कि सकारात्मक पारिवारिक सहयोग किशोरों के संवेगात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण संरक्षणकारी कारक है।

कोचुकृष्ण कुरुप एवं उनके सहयोगियों (2015) ने संयुक्त एवं एकल परिवारों में रहने वाले किशोरों के मनोसामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि संयुक्त परिवारों के किशोर सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन की दृष्टि से अधिक सक्षम थे। संयुक्त परिवार में दादा–दादी, चाचा–चाची तथा अन्य सदस्यों का सहयोग एवं मार्गदर्शन किशोरों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे उनमें आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता तथा भावनात्मक संतुलन का विकास अधिक प्रभावी रूप से होता है।

जोशी एवं कौल (2018) ने किशोरों के कल्याण तथा पारिवारिक संरचना के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवारों में रहने वाले किशोरों का मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, जीवन–संतुष्टि तथा भावनात्मक स्थिरता एकल परिवारों के किशोरों की अपेक्षा अधिक थी। अध्ययन में यह भी पाया गया कि परिवार के सदस्यों का सहयोग, सामूहिक निर्णय, परस्पर विश्वास तथा सकारात्मक पारिवारिक वातावरण किशोरों के संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

लैम एवं उनके सहयोगियों (2019) ने परिवार के साथ होने वाली दैनिक अन्तःक्रियाओं का किशोरों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि जिन परिवारों में पारिवारिक सम्बन्ध मधुर, सहयोगपूर्ण एवं स्थिर थे, वहाँ किशोर अधिक प्रसन्न, आत्मविश्वासी तथा तनावमुक्त पाए गए। इसके विपरीत अस्थिर एवं तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण में रहने वाले किशोरों में उदासी, तनाव, क्रोध तथा भावनात्मक असंतुलन अधिक देखा गया। अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि पारिवारिक वातावरण किशोरों के संवेगात्मक विकास का प्रमुख निर्धारक है।

अग्रवाल एवं बहादुर (2023) ने लखनऊ के 400 किशोरों पर संयुक्त एवं एकल परिवारों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि संयुक्त परिवारों में रहने वाले किशोर मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन, सामाजिक सहयोग तथा आत्मविश्वास के स्तर पर एकल परिवारों के किशोरों से बेहतर थे। अध्ययन के अनुसार संयुक्त परिवारों में उपलब्ध भावनात्मक सुरक्षा, अनुभवजन्य मार्गदर्शन एवं पारिवारिक सहयोग किशोरों के संवेगात्मक विकास को सुदृढ़ बनाते हैं।

शर्मा एवं शुक्ला (2023) ने बिलासपुर जिले के किशोरों पर संयुक्त एवं एकल परिवारों के सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि संयुक्त परिवारों में रहने वाले किशोरों में सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सामाजिक समायोजन का स्तर अधिक था। इन गुणों के कारण उनका संवेगात्मक विकास भी अधिक सकारात्मक पाया गया। अध्ययन ने यह निष्कर्ष दिया कि संयुक्त परिवार किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण एवं भावनात्मक परिपक्वता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्पिट्ज एवं स्टाइनहाउजेन (2023) ने परिवार की अनुकूलन क्षमता तथा पारिवारिक एकता का किशोरों के विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि जिन परिवारों में माता–पिता का व्यवहार सहयोगपूर्ण, स्नेहपूर्ण एवं प्रोत्साहन देने वाला था तथा जहाँ परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक निकटता एवं पारस्परिक विश्वास विद्यमान था, वहाँ किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्थिरता तथा संवेगात्मक विकास अधिक स्वस्थ एवं संतुलित पाया गया। अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि परिवार की सकारात्मक अनुकूलन क्षमता किशोरों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है।

समस्या कथन

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन।
2. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के संवेगात्मक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के संवेगात्मक विकास में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद जनपद के संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद जनपद के संयुक्त एवं एकल परिवारों का 250 किशोरावस्था से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

उपकरण

- शारीरिक विकास मापनी :– स्वनिर्मित प्रश्नावली।
- संवेगात्मक विकास मापनी :– स्वनिर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक विकास का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिवार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
संयुक्त	140	78.64	8.52	3.18	सार्थक
एकल	110	74.89	9.11		

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार के किशोरों का शारीरिक विकास का मध्यमान 78.64 तथा मानक विचलन 8.52 है, जबकि एकल परिवार के किशोरों का मध्यमान 74.89 तथा मानक विचलन 9.11 है। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (3.18) 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के शारीरिक विकास में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर पाया गया। संयुक्त परिवार के किशोरों का शारीरिक विकास एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

तालिका संख्या – 2

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के संवेगात्मक विकास का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिवार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
संयुक्त	140	82.35	7.84	4.26	सार्थक
एकल	110	76.91	8.43		

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार के किशोरों का संवेगात्मक विकास का मध्यमान 82.35 तथा मानक विचलन 7.84 है, जबकि एकल परिवार के किशोरों का मध्यमान 76.

91 तथा मानक विचलन 8.43 है। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (4.26) 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के संवेगात्मक विकास में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर विद्यमान है। संयुक्त परिवार के किशोरों का संवेगात्मक विकास एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

निष्कर्ष

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक विकास में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के संवेगात्मक विकास में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, एस. एवं बर्क, एम. (2015). भारत में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य का विकास : पिछले दस वर्षों के अध्ययनों की समीक्षा, एशियन जर्नल ऑफ साइकेट्री, 13, 3–12.
- कोचुकृष्ण कुरुप एवं सहयोगी (2015).संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के मनोसामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Home Science.
- जोशी एवं कौल (2018). पारिवारिक संरचना एवं किशोरों के कल्याण का अध्ययन, International Journal of Indian Psychology
- लैम एवं सहयोगी (2019). परिवार की दैनिक अन्तःक्रियाओं का किशोरों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर प्रभाव, Journal of Adolescence.
- अग्रवाल एवं बहादुर (2023). पारिवारिक संरचना का किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी', 11(2), 1571–1578.
- शर्मा एवं शुक्ला (2023). संयुक्त एवं एकल परिवारों के किशोरों के सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Research and Analytical Reviews – IJRAR
- स्पिट्ज एवं स्टाइनहाउजेन (2023). पारिवारिक अनुकूलन क्षमता एवं पारिवारिक एकता का किशोरों के मानसिक एवं संवेगात्मक विकास पर प्रभाव, Journal of Child and Family Studies

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/41

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 शोभा गिल,[1] स्वाति शर्मा[2]

for publication of research paper title

संयुक्त एवं एकल परिवारों का किशोरावस्था के बालकों के शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास पर तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com